इकाई 7 जॉन लॉक

इकाई की रूपरेखा

7.1 प्रस्तावना

7.2 जीवन और रचनाएँ

7.3 कुछ दार्शनिक समस्याएँ

7.4 प्रकृति की अवस्था और प्राकृतिक अधिकार

7.5 सामाजिक संविदा और नागरिक समाज

7.6 सहमति, प्रतिरोध और सहिष्णुता

7.7 लॉक की विरासत

7.8 सारांश

7.9 अभ्यास

7.1 प्रस्तावना

जॉन लॉक की रचनाओं का गहन और व्यापक अध्ययन हाल ही की दार्शनिक विद्वत्ता की सबसे उल्लेखनीय उपलब्धि रही है। गत पचास वर्षों में अपने महान वरिष्ठ समकालीन थॉमस हॉब्स के सिवाय शायद ही किसी अन्य राजनीतिक विचारक ने ऐतिहासिक चिंतकों का इतना अधिक ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया हो जितना "टू ट्रीटाइज़ेज़ ऑफ गवर्नमेंट" और "ऐन ऐस्से कनसर्निंग ह्यूमन अंडरस्टैंडिंग" के लेखक ने किया। "लवलेस" संग्रह और बहुत बड़ी संख्या में इस पर आधारित समालोचनाओं की नई सामग्री के भंडार की खोज ने लॉक के जीवन और विचारों के बारे में हमारे ज्ञान को बहुत अधिक बढ़ाया है। फिर भी, यह बड़े आश्चर्य की बात है कि लॉक के राजनीतिक सिद्धांत के "प्रच्छन्न अर्थ" (hidden meaning) की वास्वतिक भावना के संबंध में आज पहले की अपेक्षा कहीं अधिक मतभेद हैं। नए अध्येता के लगभग निश्चित रूप से विभिन्न प्रकार की व्याख्याओं की भूलभुलैया में खो जाने की संभावना है। जहाँ एक ओर स्ट्रॉस का गुह्यवाद (Esotericism) है जिसमें लॉक को कट्टर हॉब्सवादी, दृढ़ अहंवादी और उपयोगितावादी नीतिशास्त्र से रेमंड पोलिन द्वारा प्रस्तुत लॉक के नैतिकता से संबंधित नीतिशास्त्रीय विचार हैं जिसमें लॉक को क्लासिकल प्राकृतिक कानून का विचारक बताया गया है; वान द्वारा लॉक का "व्यक्तिवादियों के शिरोमणि" के रूप में चित्रण से लेकर केन्डाल ने उसें रूसो की तरह के समष्टिवादी के रूप में व्याख्यायित किया गया है; मार्टिन सेलिगर के विश्लेषण में लॉक के उदार संविधानवाद को मैकफेरोन ने "पूँजीवादी विनियोग" और "बूर्जुआ की तानाशाही" के रूप में निरूपित किया। इन सब व्याख्याओं में कुछ सच्चाई भी हो सकती है। लेकिन जब लॉक के दर्शन की व्याख्या को किसी विशिष्ट दार्शनिक खाँचे में तोड़-मरोड़ कर ढालने की कोशिश की जाती है तो उसका स्वरूप अत्यधिक विकृत हो जाता है। इससे न केवल इसकी प्रचुरता और उदारता नष्ट होती है बल्कि इसकी पहचान ही समाप्त हो जाती है। इससे जो विरोधाभास की स्थिति पैदा होती है उसमें टेलर-वारेंडर के नीतिशास्त्रीय, कांट-पूर्व के नैतिकतावादी और प्राकृतिक कानून और दैवी आदेश के सिद्धांत से संबंधित दार्शनिक हॉब्स की तुलना लॉक से की गई है जिसकी लियो स्ट्रास और रिचर्ड कॉक्स ने पूर्ण मनोवैज्ञानिक, अहंवादी और नैतिक सापेक्षवादी या प्रच्छन्न हॉब्सवादी

के रूप में व्याख्या की है। जे.डब्ल्यू.डब्ल्यू. वाटकिंस ने इसका व्यंग्य रूप में निम्नलिखित शब्दों में वर्णन किया है –"यह स्थिति उन परीक्षार्थियों के लिए बड़ी कष्टप्रद होगी जिनसे हॉब्स और लॉक की तुलना करने और उनमें भेद बताने के लिए कहा गया हो।" इसलिए आइए हम निम्नलिखित समझौते पर परस्पर सहमत हो जाएँ। हॉब्स हूकर परपंरा में नैतिकतावादी प्राकृतिक वकील था जबकि लॉक अहंवाद के मिश्रण का और भय तथा प्राधिकार का उपदेश देता था एवं लॉक ने यदि "*दी सेकंड ट्रीटाइज़*" लिखी तो हॉब्स ने "*लेवियाथन*" लिखी।

7.2 जीवन और रचनाएँ

लॉक के जीवन का समय (1632-1704) ब्रिटिश इतिहास के सबसे महत्वपूर्ण युग में पड़ता है। उस समय इंगलैंड में निरंकुश राजतंत्र का स्थान संसदीय लोकतंत्र ने लिया था। यह समय 1689 का गौरवपूर्व संकल्प का समय था। उस काल में लॉक के शैफ्ट्सबरी के प्रथम अर्ल लॉर्ड ऐशले के साथ बहुत घनिष्ठ संबंध थे। लॉर्ड ऐशले लॉक का मित्र और संरक्षक था। लॉक पर आरोप था कि उसने चार्ल्स-II के राज्यारोहण को विफल करने का षड्यंत्र किया था। लॉक ने राजा के द्वारा उत्पीड़न की आशंका के कारण देश से स्वेच्छा से निष्कासन ले लिया और वह हॉलैंड में जा बसा। लॉक तब तक वहाँ रहा जब तक कि 1689 में स्टुअर्ट के निरंकुश शासन का अंत नहीं हो गया। उसने विधि-सम्मत शासक और इंगलैंड के नवीन शासन के 'महान संस्थापक' के रूप में विलियम ऑफ ऑरेंज का स्वागत किया। लॉक ने 1690 में "टू ट्रीटाइज़ेज़ ऑफ गवर्नमेंट" का प्रकाशन किया। इसी साल उसकी दार्शनिक रचना "दी ऐस्से कनसर्निंग ह्यूमन अंडरस्टैंडिंग" भी प्रकाशित हुआ। लॉक की अन्य महत्वपूर्ण रचनाएँ थीं –"लैटर कनसर्निंग टॉलरेशन" (1689, 1690 और 1692) तथा "सम थॉट्स कनसर्निंग एजुकेशन" (1693)। लॉक के अन्य निबंध "ऑन लॉज़ नेचर" डब्ल्यू. वॉन लेडन के अंग्रेज़ी अनुवाद के साथ 1959 में प्रकाशित हुए। (ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस)

"दी टू ट्रीटाइज़ेज़ ऑफ गवर्नमेंट" के दो भाग हैं। इनमें से पहले भाग में फिल्मर का खंडन है और दूसरे भाग (जो दोनों में अधिक महत्वपूर्ण है) में ''नागरिक सरकार के उद्भव, विस्तार और अंत'' के संबंध में जानने की इच्छा है। इस पुस्तक को लिखने का उद्देश्य गौरवपूर्ण क्रांति को न्यायसंगत ठहराना है जिसमें "राज्य के संस्थापक, हमारे तत्कालीन राजा विलियम को राजा के पद पर प्रतिष्ठित किया गया था।" उसने अपने पद के गौरव को बढ़ाया। वह जनता की राय में अब तक की सभी विधि-सम्मत सरकारों का एकमात्र सच्चा प्रतिनिधि राजा था और विश्व के सामने इस बात को न्यायोचित ठहराने के लिए कि इंगलैंड के लोग न्यायसंगत तथा प्राकृतिक अधिकारों से प्यार करते हैं और उन्होंने उन अधिकारों को संरक्षित कराने का संकल्प किया और उसने राष्ट्र की तब रक्षा की जब वह गुलामी और विनाश के कगार पर था। आधुनिक विद्वानों ने इस ऐतिहासिक अनुबंध को चुनौती दी। पीटर लैस्लेट का कथन है कि "सेकेंड ट्रीटाइज़" 1681 के आसपास लिखी गई थी और इसे प्रथम ट्रीटाइज़ से पहले लिखा गया था और बाद में लॉक ने इसमें प्रथम ट्रीटाइज़ को जोड़ दिया। इसके प्रथम ट्रीटाइज़ को सामान्यतः दार्शनिक दृष्टि से विशेष महत्व नहीं दिया जाता। इस विषय में फिल्मर और लॉक के विचार भी एक अन्य विवादास्पद विषय है। सभी विद्वान इन दोनों ट्रीटाइज़ेज़ की रचना की तारीख और क्रम के बारे में लैस्लेट के विचार से सहमत नहीं हैं। रिचर्ड ऐशक्राफ्ट और जॉन डन ने इन प्रश्नों पर विस्तार से चर्चा की है। हम अपने वर्तमान प्रायोजन को ध्यान में रखते हुए इस ऐतिहासिक विवाद को दरकिनार कर सकते हैं और फिलहाल अधिक सैद्धांतिक मुद्दों को ले सकते हैं।

7.3 कुछ दार्शनिक समस्याएँ

लॉक के दार्शनिक सिद्धांत के दार्शनिक आधार के संबंध में पहले और सबसे प्रमुख विवाद का संबंध तथाकथित विरोध से है। लॉक के "ऐस्से कनसर्निंग ह्यूमन अंडरस्टैंडिंग" में प्रतिपादित ज्ञान के अनुभव पर आधारित सिद्धांत और "सेकेंड ट्रीटाइज़ ऑफ सिविल गवर्नमेंट" (जो इसके राजनीतिक सिद्धांत की नींव का पत्थर है) में चित्रित प्राकृतिक कानून के तर्कबुद्धिपरक दृष्टिकोण के बीच स्पष्ट विरोध दिखाई देता है। सी.ई. वान, जॉर्ज एच. सैबाइन और पीटर लैस्लेट जैसे समालोचकों का कथन था कि प्राकृतिक कानून के विचार का लॉक के समग्र अनुभववाद के आधार पर समाधान नहीं किया जा सकता जो उसके अंतर्जात विचारों और उसके इंद्रियों के अनुभव और चिंतन से संबंधित ज्ञान के उद्‌भव के सिद्धांत की समालोचना में दिखाई देता है। लेकिन लॉक के ज्ञानशास्त्र का सावधानी से विश्लेषण करने से हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि लॉक को पूर्ण रूप से अनुभववादी नहीं कहा जा सकता। उसके सिद्धांत में महत्वपूर्ण तर्कबुद्धिपरक तत्वों का समावेश है। वह स्पष्ट रूप से कहता है कि उसके अंतर्जात विचारों की समालोचना से यह नहीं समझा जाना चाहिए कि उसके आशय में प्राकृतिक कानून का निषेध है। इसके अतिरिक्त केवल इंद्रियों के अनुभव द्वारा किसी वस्तु का विशिष्ट ज्ञान (यानी सही ज्ञान) तब तक प्राप्त नहीं किया जा सकता जब तक कि मन का सृजनात्मक सहयोग न हो। उसका ज्ञान का सिद्धांत कम से कम अपने व्यापक परिप्रेक्ष्य और उद्देश्य में कांट के समालोचनात्मक दर्शन से बहुत मिलता-जुलता है और इसे उसके पश्चवर्ती ब्रिटिश अनुभववादियों के परमाणवीय संवेदनवाद (atomistic sensationalism) से स्पष्ट रूप में अलग करना होगा।

लॉक के सिद्धांत का एक अन्य तत्व मनोवैज्ञानिक सुखवाद है, जिसे ऐसा समझा जाता है कि वह उसके प्राकृतिक कानून के विचार और उसकी अंतर्ज्ञानवादी व्यंजना की संबद्धता एवं संपूर्णता को हानि पहुँचाता है। निश्चय ही लॉक में नैतिकता की सुखवादी प्रेरणा से इंकार नहीं किया जा सकता। परंतु यह स्मरण रखना होगा कि वह अच्छाई और बुराई की सुख और दुख के रूप में परिभाषा करता है। उसकी दृष्टि में ये नैतिक दृष्टि से उचित कार्यों के परिणाम हैं, उसके मूल तत्व नहीं। एक नैतिक कानून शाश्वत और सार्वभौम होता है और यह उसके आनंददायक परिणामों के बावजूद बाध्यकारी है। लॉक के अनुसार उपयोगिता किसी कानून या बाध्यता का आधार नहीं होती बल्कि वह इसकी आज्ञाकारिता का परिणाम है। इसलिए लॉक का नैतिक सिद्धांत अनिवार्य रूप से उपयोगितावादी और परिणामवादी न होकर नीतिशास्त्रीय है। इसी तरह, तर्कबुद्धिवादी सिद्धांत में वह संकल्पवादी के बजाय कहीं अधिक बुद्धिवादी है। इसलिए "सेकेंड ट्रीटाइज़" में अभिगृहीत प्राकृतिक कानून और "ऐस्से" के नैतिक तथा ज्ञानशास्त्रीय सिद्धांत में कोई विरोध नहीं है। लॉक प्राकृतिक कानून का एक संगत सिद्धांतवादी है।

7.4 प्रकृति की अवस्था और प्राकृतिक अधिकार

इस प्रकार हम देखते हैं कि प्राकृतिक कानून लॉक के नैतिक और राजनीतिक सिद्धांत का अनिवार्य अंग हैं। यह उसकी प्रकृति की अवस्था और सार्वजनिक समाज की संकल्पना के केंद्र में है। जैसा कि हम जानते हैं कि प्रकृति की अवस्था राज्य के सभी संविदा सिद्धांतों का स्थायी खजाना है। इसे राजनीतिक समाज की स्थापना से पूर्व की अवस्था समझा जाता है। लॉक के मत में यह पूर्व-राजनीतिक अवस्था तो है लेकिन पूर्व-सामाजिक अवस्था नहीं, क्योंकि मनुष्य अनिवार्यतः और स्वभाव

से सामाजिक है। प्रकृति की अवस्था किसी भी रूप में सबके साथ युद्ध न होकर "शांति, सद्भाव, पारस्परिक सहयोग और आत्म-संरक्षण की अवस्था है।" इसके पास शासन के लिए प्रकृति का कानून है। "यह कानून हर व्यक्ति पर अनुग्रह करने वाला है और तर्क वह कानून है जो पूरे मानव समाज को शिक्षित करता है, जिसे इसका परामर्श लेना पड़ता है कि समाज में सब समान हैं और स्वतंत्र हैं; किसी को एक-दूसरे के जीवन, स्वास्थ्य, आज़ादी और स्वामित्व को हानि पहुँचाने का अधिकार नहीं है क्योंकि मनुष्य उस एक सर्वशक्तिमान अत्यधिक बुद्धिमान कर्ता की कारीगरी है। सब उस एक संप्रभुता-संपन्न स्वामी के नौकर हैं जो उसके आदेश से और उसके कार्य के लिए इस संसार में भेजे गए हैं; वे उसकी संपत्ति हैं। वे किसकी कारीगरी हैं? वे तब तक यहाँ रहते हैं जब तक उसकी नहीं, उस सर्वशक्तिमान की खुशी होती है, उसकी कृपा से सबको एक-जैसी सुविधाएँ प्राप्त हैं और एक प्रकृति के समुदाय का सब मिलकर उपभोग करें; हम में से कोई किसी के अधीन नहीं है, ऐसा नहीं समझा जाना चाहिए कि किसी को एक-दूसरे को मारने का अधिकार है या हम अपने स्वार्थ के लिए एक-दूसरे का उपयोग कर सकते हैं और जो निम्न कोटि के प्राणी हैं वे हमारे उपयोग के लिए हैं।" प्रकृति की अवस्था में मनुष्यों को जीवन, स्वतंत्रता और संपत्ति के प्राकृतिक अधिकार हैं। ये अधिकार अहस्तांतरणीय हैं और उनका उल्लंघन नहीं किया जा सकता, क्योंकि ये प्रकृति के कानून से पैदा हुए हैं और यह ईश्वरीय तर्क है। प्रत्येक व्यक्ति तर्क से बँधा हुआ है, वह न केवल आत्म-संरक्षण करता है बल्कि उसे तब तक मानवता का संरक्षण भी करना होता है जब तक कि उसके अपने संरक्षण का उससे टकराव न होता हो। इसके अलावा, मनुष्य मात्र समान है, स्वतंत्र है और कोई भी ऐसा सामान्य स्वीकृत उत्कृष्ट व्यक्ति नहीं है जिसके आदेशों का पालन करना उसके लिए अनिवार्य हो। प्रत्येक व्यक्ति अपने कार्यों का स्वयं निर्णायक है। यद्यपि प्राकृतिक अवस्था स्वतंत्रता की अवस्था है, परंतु यह स्वच्छंदता की स्थिति भी नहीं है। किसी भी व्यक्ति को यह अधिकार नहीं है कि वह अपनी जीवन-लीला समाप्त करे या किसी दूसरे व्यक्ति के जीवन को क्षति पहुँचाए "केवल उस प्रयोजन को छोड़कर जहाँ आत्म-संरक्षण के बजाय जीवन से कोई दूसरा महान कार्य सिद्ध होता हो।" क्योंकि प्रकृति की अवस्था में कोई ऐसा सर्वमान्य न्यायाधीश नहीं है जो प्राकृतिक नियम का उल्लंघन करने वाले को दंड दे सके। प्रत्येक व्यक्ति अपने कार्यों का स्वयं निर्णायक है और उसके पास प्रकृति के कानून का उल्लंघन करने वाले को दंड देने की कार्यकारी शक्ति है। यह उल्लंघन स्वयं उसके विरुद्ध या सामान्य रूप से मानव-मात्र के विरुद्ध हो सकता है। लेकिन जब मनुष्य स्वयं अपने बारे में निर्णायक होते हैं तो निष्पक्ष नहीं हो सकते। इसके अलावा प्रकृति की अवस्था में कुछ अन्य परेशानियाँ भी हो सकती हैं, क्योंकि वहाँ कोई पूर्व-निर्धारित, सुनिश्चित, ज्ञात कानून नहीं है जिसे सही या गलत के लिए मानक कहा जा सके। यहाँ कोई राजा की ओर से न्यायाधीश भी नहीं है जो विवाद के मामलों का निपटारा कर सके और अंततः "प्रकृति की अवस्था में जब उचित हो तो दंड देने और उसका समर्थन करने तथा उसके कार्यान्वयन के लिए शक्ति की आवश्यकता होती है।" दूसरे शब्दों में, प्रकृति की अवस्था में तीन कमियाँ या परेशानियाँ हैं। ये हैं – कानून की घोषणा करने के विधायी अधिकार का अभाव, कानून के उल्लंघन के मामलों का निर्णय करने के लिए निष्पक्ष निर्णायक का अभाव; और कानून के अवैयक्तिक निष्पादन का अभाव। इस प्रकार हम देखते हैं कि प्रकृति की अवस्था, जबकि यह न तो युद्ध की स्थिति है और न कोई काव्यात्मक स्थिति है और इसलिए जल्दी या देर से उसे प्रकृति की अवस्था के कानून का स्थान लेना ही होगा। मानव की प्रकृति में स्वार्थपरक प्रवृतियों के कारण संघर्ष और अनिश्चतता का होना स्वाभविक है। प्रकृति की अवस्था के हमेशा युद्ध की स्थिति में परिवर्तित होने का खतरा बना रहता है। जहाँ हर व्यक्ति अपने मामले का निर्णायक होता है और एकमात्र उसी के पास दंड देने का अधिकार रहता है तो वहाँ इससे शांति को खतरा होना स्वाभाविक है।

यद्यपि कभी-कभी लॉक ने अपनी प्रकृति की अवस्था की संकल्पना के समर्थन में ऐतिहासिक साक्ष्य देने का प्रयास किया है लेकिन यह अनिवार्यतः उसकी तर्क पर आधारित रचना है। यह ऐसी परिकल्पना है जिसका उद्देश्य राजनीतिक समाज की प्रकृति और उसके आधार पर व्याख्या करना है। लॉक के प्रकृति की अवस्था के विवरण से एक और विवादास्पद बात उभरकर सामने आती है। वह है - इसका दोहरा स्वरूप। लियो स्ट्रॉस और रिचर्ड कॉक्स जैसे लेखकों के अनुसार लॉक का सिद्धांत मनुष्य की प्रकृति के बारे में हॉब्स के विचारों का ही अपेक्षाकृत ग्राह्य मधुर भाषा में पुनर्कथन है (लियो स्ट्रॉस, 1960)। इन लेखकों का विश्वास है कि लॉक ने जिस प्रकृति की अवस्था का "शांति, सद्भाव, पारस्परिक सहयोग और संरक्षण" के रूप में वर्णन किया है, विश्लेषण करने पर वह आवेश के कारण युद्ध की स्थिति में परिवर्तित हो जाता है। यह ऐसी स्थिति है जिसका उपचार सभ्य समाज के निर्माण में है। इन्होंने लॉक पर न केवल असंगति का बल्कि मिथ्याचार का भी आरोप लगाया और कहा कि उसके कथन का "प्रच्छन्न अर्थ" है। प्रोफेसर मैकफर्सन ने लॉक की प्रकृति की अवस्था में दो परस्पर विरोधी विचार पाए। इनमें से एक मुद्रा (रुपए-पैसे) के आविष्कार से पूर्व का है और दूसरा इसके अविष्कार के बाद का। इन्होंने लॉक पर बूर्जुआ (मध्यवर्गीय) मनोवृत्ति का होने का आरोप लगाया। परंतु लॉक के संबंध में ये व्याख्याएँ अत्यधिक एकांतिक और प्रतिबंधक हैं। वे लॉक की वास्तविक भावना की उपेक्षा करके उसके द्वारा स्पष्ट रूप से अभिव्यक्त अभिमत के विरुद्ध हैं। इस मत को आर्सलेफ़, ऐशक्राफ्ट और सेलिगर जैसे विद्वानों ने सही तौर पर अस्वीकार कर दिया। इन्होंने लॉक के बारे में किसी तरह के वैचारिक पूर्वग्रह या दार्शनिक पूर्वधारणा और आत्म-घोषित गुप्त पद्धति के बिना अपनी सम्मति लिखीं है।

लॉक के राजनीतिक दर्शन की एक अन्य महत्वपूर्ण संकल्पना जीवन, स्वतंत्रता और संपत्ति पर प्राकृतिक अधिकार की है। इन प्राकृतिक अधिकारों का उद्भव प्राकृतिक कानून से होता है और इसके द्वारा ही ये सीमित होते हैं। "मनुष्य की स्वतंत्रता और अपनी इच्छानुसार कार्य करने की आज़ादी उसके अपने तर्क पर आश्रित होती है जो उसे उस कानून के अंतर्गत हिदायत दे सकता है जिसके द्वारा वह स्वयं को शासित करता है।" "कानून का उद्देश्य स्वतंत्रता को समाप्त करना या उसे प्रतिबंधित करना नहीं है अपितु उसे संरक्षित करना या बढ़ाना है क्योंकि प्राणिजात की सभी अवस्थाओं में जहाँ कोई कानून नहीं होता, वहाँ स्वतंत्रता भी नहीं होती।"

संपत्ति पर अधिकार का एक आवश्यक परिणाम के रूप में जीवन के अधिकार और स्वतंत्रता से सीधा संबंध है। कहीं-कहीं लॉक ने सभी प्राकृतिक अधिकारों को संपत्ति पर अधिकार में जोड़ दिया है। परंतु संपत्ति ही उसका एकमात्र चिंता का विषय नहीं है। जीवन तथा स्वाधीनता और भी अधिक महत्वपूर्ण हैं। मनुष्य प्रकृति की वस्तुओं के साथ अपने श्रम को मिलाकर संपत्ति पैदा करता है। आरंभ में सभी वस्तुएँ साझा थीं। परंतु साझा स्वामित्व मनुष्य को जीवन के लिए आवश्यक साधन मुहैया कराने के लिए पर्याप्त नहीं है और वह उसकी आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं कर सकता। मनुष्य को प्रकृति द्वारा प्रदत्त साधनों के साथ अपने श्रम को मिला कर उन्हें और अधिक प्रभावोत्पादक तथा लाभदायक बनाकर उन्हें उपयोग करने लायक बनाना चाहिए। चूंकि मनुष्य अपने व्यक्तित्व, शरीर और अंगों का स्वामी है इसलिए जिन वस्तुओं के साथ वह अपनी मेहनत मिलाता है वह साधिकार उसकी संपत्ति हो जाती है। यह मूल्य के प्रसिद्ध श्रम सिद्धांत का मूल है जो क्लासिकी और मार्क्स के अर्थशास्त्र दोनों में समान है। लॉक का इस बात में विश्वास नहीं है कि मनुष्य को संपत्ति का असीमित अधिकार है। संपत्ति के स्वामितव के संबंध में तीन महत्वपूर्ण सीमाएँ हैं। इनमें पहली है – "श्रम सीमा"। इसका अभिप्राय उतनी संपत्ति से है जितनी सामान्य संसाधनों के साथ श्रम के मिश्रण के परिणामस्वरूप

अधिगृहीत की जाती है। दूसरी सीमा "पर्याप्तता सीमा" है। इसमें मनुष्य को ऐसा आदेश है कि वह उतनी ही संपत्ति पर अधिकार करे जितनी उसके लिए पर्याप्त है और बाकी संपत्ति दूसरों के लिए छोड़ दे। तीसरी सीमा को "विनाश (spoilage) सीमा" कह सकते हैं। इसमें मनुष्य को उसी वस्तु को लेना चाहिए जिसका वह सदुपयोग कर सकता हो, क्योंकि ईश्वर ने मनुष्य के लिए कोई भी वस्तु नष्ट करने या बिगाड़ने के लिए नहीं बनाई है। यदि कोई व्यक्ति आवश्यकता से अधिक लेता है तो वह अपने पड़ोसी के हिस्से पर अधिकार करता है। यह प्रकृति के कानून द्वारा वर्जित है।

बहुत-से समालोचकों ने इन सीमाओं को अधिकांशतः शाब्दिक पाया है। ये सीमाएँ प्रकृति की अवस्था की स्थिति में बिल्कुल बेकार हो गई हैं, विशेष तौर पर मुद्रा (रुपए-पैसे) के आविष्कार के बाद। जहाँ तक तथाकथित "श्रम सीमा" का प्रश्न है, मैकफर्सन की समीक्षा में कहा गया है कि लॉक ने इसे कभी गंभीरता से नही लिया लेकिन कुछ उन विद्वानों ने इसे उसका सिद्धांत मान लिया, जिन्होंने इसे मानवीय उदारवाद की आधुनिक परंपरा के रूप में ग्रहण किया। मज़दूरी के रूप में श्रम के आरंभ होने से यानी पैसे देकर दूसरे के श्रम को खरीदने के अधिकार की परंपरा के आरंभ होने से यह संभव हो गया है कि कोई व्यक्ति दूसरे व्यक्ति की मेहनत से पैदा किए गए उत्पाद को खरीद सकता है। इसके अलावा, लॉक मनुष्य को यह अधिकार देता है कि वह अपनी संपत्ति को वसीयत कर सकता है। मैकफर्सन के अनुसार यह "लॉक के मध्ययुगीन विचार से हटने का संकेत करता है और यह हॉब्स द्वारा अभिव्यक्त बूर्जुआ यानी मध्यवर्गीय विचार की स्वीकृति है।" मुद्रा का प्रयोग आरंभ होने से मनुष्य वस्तुओं की मुद्रा से अदला-बदली कर सकता है। इससे वस्तु को न बिगड़ने (non-spoilage) के सिद्धांत द्वारा थोपी हुई सीमा समाप्त हो जाती है। अपनी बात का उपसंहार करते हुए मैकफर्सन कहता है कि लॉक न केवल संपत्ति की असमानता के अधिकार को उचित ठहराता है बल्कि वह व्यक्ति द्वारा असीम संपत्ति रखने का भी समर्थन करता है। इस प्रकार लॉक को "स्वत्वात्मक व्यक्तिवाद" (possessive individualism) और "मध्यवर्गीय तानाशाही" (dictatorship of the bourgeoisie) के सिद्धांतवादी के रूप में प्रस्तुत किया गया है। इसे "पूँजीवादी भावना" (spirit of capitalism) के ठेठ प्रतिनिधि के रूप में देखा जाता है।

प्लैमेनात्स की आलोचना आदर्शवादी आधार के बजाय तार्किक आधार पर ज्यादा आधारित है। उसने लॉक के संपत्ति के सिद्धांत में तीन प्रमुख कमियों की ओर संकेत किया है : सबसे पहले उसने संपत्ति को अपनाने की जो सीमा रखी और यह निषेध किया कि "कोई वस्तु बिगाड़ी न जाए"। ऐसा कथन असंगत और अपर्याप्त है क्योंकि ऐसा बहुत कम स्थितियों में होता है। दूसरे, विरासत का अधिकार (जिसे लॉक ने बड़ी होशियारी से संपत्ति के अधिकार में शामिल किया)। इस अधिकार का संबंध न तो जीवन और स्वतंत्रता को संरक्षित करने से है और न ही यह वस्तुओं के साथ अपने श्रम को मिलाकर एकमात्र अपने उपयोग के लिए अलग रखी गई संपत्ति से है। और तीसरे, यह भी ठीक नहीं है कि जब तुम किसी वस्तु के साथ अपने श्रम को मिला भी देते हो कि तुम, उन अन्य व्यक्तियों के बजाय जिन्होंने उस वस्तु में अपना श्रम मिश्रित नहीं किया है, उसका एकमात्र अपने लिए उपयोग कर सको, अर्थात् क्योंकि तुमने सबसे पहले उस वस्तु के साथ अपना श्रम मिलाया था। इसलिए यह तुम्हारा अधिकार हो जाता है कि तुम उसका दूसरों के साथ मिलकर उपयोग न करो चाहे बाद में वे भी उसमें अपना श्रम मिला दें। (जॉर्ज प्लेमेनात्स, 1963 : 242)

पूँजीवादी अर्थव्यवस्था और मध्यवर्गीय तानाशाही के बारे में लॉक की आदर्शवादी व्याख्या को ईसैया बर्लिन, एलन रयान, मार्टिन सेलिगर, रिचर्ड ऐशक्राफ्ट, हैन्स आर्सलेफ़, जॉन डन जैसे विद्वानों ने चुनौती दी। उनका कहना है कि मैकफर्सन के दृष्टिकोण में प्राकृतिक कानून और सामान्य हित के विचार की महत्वपूर्ण भूमिका को नज़रअंदाज कर दिया गया है। लॉक के विचार अत्यधिक मध्ययुगीन

और ईश्वर विश्वासी हैं, फिर भी कैसे उसका ध्यान दैवी तर्क के आदेशों की ओर नहीं गया और उसने बिना किसी संकोच के उभरते हुए पूँजीवादी वर्ग का समर्थन किया। इस वर्ग का स्वभाव धन कमाने के लिए गलाकाट प्रतियोगिता करना है। इसका स्वाभाविक परिणाम वर्ग-संघर्ष और निर्धन-अभावग्रस्त लोगों की दुर्दशा होता है। इस विषय में जॉर्ज एच. सैबाइन के विचार शायद अधिक उपयुक्त हैं। सैबाइन का कहना कि "उसने प्राकृतिक नियम (जिसका हूकर जैसे लेखकों की दृष्टि में जो अर्थ था) के पुराने सिद्धांत को उसके सभी भावनात्मक अर्थों और लगभग धार्मिक विवशताओं के साथ पूर्ण रूप से तिलांजलि दे दी। लेकिन उसने अनजाने में इसे पूरी तरह बदल दिया। इसके बजाय कि कानून द्वारा समाज के कल्याण का आदेश दिया जाए लॉक ने सहज, अजेय, वैयक्तिक अधिकारों की स्थापना की जो समुदाय की क्षमता को सीमित करने तथा निजी व्यक्तियों की संपत्ति और स्वाधीनता में हस्तक्षेप को रोकने में बाधक बनते हैं" (जी.एच. सैबाइन, 1963; पृ. 529)। स्ट्रॉस के समान मैकफर्सन ने भी इस बात पर ध्यान नहीं दिया कि लॉक के समकालीन लेखकों में से किसी ने भी स्वयं उनके द्वारा स्वीकृत दृष्टिकोणों को मद्देनज़र रखते हुए लॉक के विचारों को न तो पढ़ा, न ही उसे समझने का प्रयास किया। और न ही उन्होंने यह भी देखा कि वस्तुतः लॉक के व्यक्तिगत विचार क्या थे? उसने अपनी स्थिति को उन धार्मिक विश्वासों के परिप्रेक्ष्य में पहचाना, जिन्हें वह संभवतः अल्पबुद्धि वाले लोगों के सामने प्रलोभन के रूप में पेश कर रहा था; या वह क्रांतिकारी राजनीतिक कार्रवाई के बचाव के बारे में और उन बहुत थोड़े-से अल्पसंख्यक समकालीन व्यक्तियों के द्वारा अपनाई गई धार्मिक असहमति की स्थिति के बारे में लिख रहा था, जिसने उन पूर्व-स्थापित संपत्ति के मालिकों को बिल्कुल प्रभावित नहीं किया जिनके हितों की सुरक्षा की उससे अपेक्षा की गई थी (ऐशक्राफ्ट)। यह बात मैकफर्सन के विपरीत जाती है कि उसने 17वीं शताब्दी के इंगलैंड के समाज के बारे में जो दावा किया था उसे सिद्ध करने के लिए वह आवश्यक ऐतिहासिक और समाजशास्त्रीय साक्ष्य प्रस्तुत करने में विफल रहा। लॉक के पर्यावरण संबंधी विवरण के आधार पर मैकफर्सन ने समाज के मॉडल का जितना अनुपयुक्त चित्र प्रस्तुत किया उतना ही उस मॉडल को लॉक के "टू ट्रीटाइज़ेज़" के अभिप्रेत प्रयोजन के साथ संबद्ध करना कठिन होगा (रिचर्ड ऐशक्राफ्ट, 1987 : 301-302)। उसी प्रकार मार्टिन सेलिगर का कथन है कि लॉक द्वारा कथित निजी संपत्ति से संबंधित परिसीमनों को कभी भी अधिक सक्षम उत्पादन के हित में या तो मुद्रा के आविष्कार द्वारा या भू-संपदा को मान्यता प्रदान करके मिथ्या नहीं किया गया। हम संपत्ति के अधिकार के अधिक प्रभावशाली उपयोग के इस विचार का श्रेय लॉक को नहीं दे सकते, क्योंकि कोई सकारात्मक कानून संपत्ति के संचय को प्राकृतिक कानून के अनुसार नियंत्रित नहीं कर सकता। संपत्ति पर अधिकार सभी प्राकृतिक अधिकारों का पूर्व-प्ररूप है। ये ऐसी स्वतंत्रताएँ हैं जो प्राकृतिक कानून द्वारा विहित हैं और सभी कार्य-क्षेत्रों में इस स्वतंत्रता की रक्षा और नियंत्रण सकारात्मक कानून द्वारा किया जाता है (मार्टिन सेलिगर, 1968 : 166-167)।

प्रोफेसर डन ने अपनी उल्लेखनीय रचना "दी पॉलिटिकल थॉट ऑफ जॉन लॉक" में लॉक के विवरण की व्याख्या की है जो मैकफर्सन के विवरण के एकदम विरुद्ध है। डन के अनुसार "लॉक के सामाजिक सिद्धांत को केल्विन के सामाजिक मूल्यों के विस्तारीकरण के रूप में देखा जाना चाहिए जिसमें धार्मिक सत्ता के सांसारिक केंद्र का अभाव है और जो अनेक लोकप्रिय चुनौतियों की प्रतिक्रिया स्वरूप है।" (जॉन डन, पृ. 259) "लॉक ने मानव अस्तित्व की युक्तियुक्तता को देखा जो धार्मिक सत्य पर आश्रित थी, और इसे न्यायसंगत ठहराने के लिए उसने अपने जीवन का बहुत बड़ा भाग लगा दिया था।" (जॉन डन, पृ. 263) इस बात को और अधिक विस्तार से स्पष्ट करते हुए डन (1980, 1983 क) ने कहाः "राजनीतिक एजेंसी के संदर्भ में परकीकृत (alienated) आधुनिक संकल्पना के विरुद्ध और मुख्य रूप से इसके स्वरूप के सहायक दृष्टिकोण को जो आधुनिक राजनीतिक विचारधारा पर हावी है, लॉक ने

मानवीय महत्व और राजनीतिक एजेंसी की युक्तिपरकता की मूलभूत व्यक्तिवादी संकल्पना को इसके सामाजिक संदर्भ की अपरकीकृत संकल्पना के साथ मिला दिया है क्योंकि राजनीतिक एजेंसी की यह संकल्पना अपनी संरचना और स्थिरता के लिए देवत्व और व्यक्तिगत मानवीय एजेंट के बीच वैयक्तिक संबंध पर आश्रित है। इसे आधुनिक राजनीतिक पहचान को स्थापित करने के आधार के रूप में मुश्किल से स्वीकार किया जा सकता है।"

अत्यंत सावधानी से किए गए विस्तृत अध्ययन के बाद ए. जॉन सिमन्स इस निष्कर्ष पर पहुँचा कि लॉक ने "निश्चय ही लोलुपता की निंदा की (स्ट्रॉस के दावे के विरुद्ध "नेचुरल राइट्स" के पृष्ठ 257 पर) और इस बात का भी कोई संकेत नहीं मिलता कि वह *असीमित* संपत्ति के संचय के अपने अधिकार का बचाव करना चाहता हो। लेकिन न तो वह पैसे के उपयोग और उससे पैदा होने वाली अत्यधिक असमानता को ईश्वर की इच्छा के विरुद्ध मानता है और न ही प्राकृतिक संपत्ति से संबंधित कानूनों के अंतर्गत सभी प्रकार के विधि-सम्मत विनियोग को समाप्त करना चाहता है।" (ए. जॉन सिमन्स, 1994, पृ. 305) सिमन्स के अनुसार लॉक की स्थिति "बीच की है। वह न तो संपत्ति के उन्मुक्त संचय के पक्ष में है और न ही संपत्तियों के आमूल पुनर्वितरण के पक्ष में।"

ऐसा प्रतीत होता है कि लॉक का संपत्ति का सिद्धांत संपत्ति के पर्याप्त विनियमन, अत्यधिक संचय और संपत्ति के समान वितरण के हित में राजनीतिक प्राधिकार द्वारा भूस्वामित्व के निर्धारण के बीच झूल रहा है। यद्यपि कोई भी उस पर संपत्तिधारी वर्गों के प्रति सामाजिक या राजनीतिक दृष्टि से पक्षपातपूर्ण विभेदक तर्कसंगतता के सिद्धांत का आरोप नहीं लगा सकता। लेकिन इस बात को अस्वीकार नहीं किया जा सकता कि उसकी युक्तियाँ सामान्य नागरिकों की तुलना में उन लोगों के पक्ष में थीं जो बड़ी संपत्तियों के मालिक थे। पीटर लैस्लेट के शब्दों में लॉक के सिद्धांत को निम्नलिखित रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है :

"राजनीतिक सत्ता द्वारा संपत्ति के अत्यल्प नियंत्रण का भी "टू ट्रीटाइज़ेज़" के सिद्धांत के साथ सामंजस्य स्थापित किया जा सकता है और प्रोफेसर वाइनर के अनुसार लॉक ने कहीं भी संपत्ति के अधिकारों के संबंध में अपने वाणिज्यिक युग के जटिल विनियमों के विरुद्ध शिकायत नहीं की। हमने जिन सिद्धांतों की चर्चा की है उनके आधार पर यदि पूर्ण साम्यवाद नहीं तो निश्चित ही पुनर्वितरणात्मक कराधान और शायद राष्ट्रीयकरण को भी न्यायसंगत ठहराया जा सकता है। इसके लिए यदि किसी चीज़ की आवश्यकता है तो वह समाज के बहुसंख्यक वर्ग की सहमति की जिसे नियमित और संवैधानिक रूप से अभिव्यक्त किया जाए। ऐसी स्थिति में चाहे संपत्तिधारी अल्पमत में ही क्यों न हों ऐसा कानून स्वीकार्य होगा।'' (पीटर लैस्लेट, पृ. 104-105)

"वस्तुतः लॉक न तो "समाजवादी" था और न ही "पूँजीवादी"। उसके संपत्ति के सिद्धांत में इन दोनों अभिवृत्तियों के तत्व पाए जाते हैं। इसके अलावा संभवतः उसने अपने विवरण में इस बात का उल्लेख नहीं किया या वह इसे कहने में असफल रहा। उसने भूमि और भूस्वामित्व को राजनीतिक शक्ति के आधार के रूप में राष्ट्रीय चिंतन में प्रतिनिधित्व देने का समर्थन नहीं किया। अठारहवीं शताब्दी में अपने व्यापक बौद्धिक और राजनीतिक प्रभाव के बावजूद इस विषय में वह बंजर भूमि के समान था जिस पर कोई अन्य प्रभाव नहीं पड़ सकता था। लेकिन उसने अपने संपत्ति के सिद्धांत का उपयोग राजनीतिक समाज को पीढ़ी-दर-पीढ़ी निरंतरता प्रदान करने के लिए किया।

7.5 सामाजिक संविदा और नागरिक समाज

ऐसी क्या चीज़ है जो मनुष्य को समाज की ओर प्रेरित करती है? लॉक के अनुसार ईश्वर मनुष्य को उसकी "आवश्यकता, सुविधा और प्रवृत्ति के दृढ़ बंधन में बाँध देता है।" "राजनीतिक शक्ति के द्वारा कानून बनाने का अधिकार मिल जाता है और उस अधिकार के द्वारा मृत्युदंड या अन्य छोटे दंडों का विधान किया जाता है। इन दंडो का उद्देश्य संपत्ति का विनियमन और संरक्षण करना होता है और समुदाय के बल का उपयोग इन कानूनों को लागू करने, विदेशी आक्रमण आदि से होने वाली क्षति से जनता की रक्षा करने के लिए और यह सब जन-सामान्य के हित के लिए किया जाता है।" और "मनुष्य स्वभाव से स्वतंत्र, समान और स्वाश्रित होते हैं, किसी को भी उसकी संपत्ति (अर्थात प्रकृति की अवस्था) से बेदखल नहीं किया जा सकता और बिना उसकी खुद की सहमति के उसे किसी अन्य की राजनीतिक शक्ति के अधीन भी नहीं किया जा सकता।" इसलिए समस्या सब लोगों की आम सहमति से नागरिक समाज की स्थापना की है। इसके लिए किसी ऐसी स्वतंत्र तथा निष्पक्ष सत्ता की स्थापना की आवश्यकता है जिसे लोग प्राकृतिक कानून का उल्लंघन करने वालों को सजा देने के अपने अधिकार को अंतरित कर दें। इस नागरिक समाज के गठन के बाद सभी व्यावहारिक प्रयोजनों के लिए उक्त आम सहमति बहुसंख्यक जनता की सहमति बन जाती है। सभी दलों को बहुसंख्यक समाज के संकल्प को स्वीकार कर लेना चाहिए क्योंकि इसमें पूरे समुदाय का बल होता है और यही राजनीतिक कार्रवाई का एकमात्र तरीका है। इस प्रकार सभी मनुष्यों को एकमत से इस निकाय से संबद्ध होने के लिए सहमत होना चाहिए और अपने मामलों का निपटारा बहुसंख्यक जनता की सहमति से करना चाहिए। इस राजनीतिक नागरिक समाज की स्थापना के बाद, अगले चरण में सरकार या "विधानमंडल" (legislative) की नियुक्ति की जाए जो प्राकृतिक कानून की घोषणा करके उसका पालन कराए। लॉक के अनुसार यह जनता द्वारा स्थापित "सर्वोच्च" सत्ता है। यहाँ हमारे सामने दो भिन्न-भिन्न कार्य हैं - एक के द्वारा नागरिक समाज की स्थापना होती है और दूसरे के द्वारा सरकार का गठन होता है। इनमें से यदि पहला संविदा का परिणाम है तो दूसरी केवल न्यासीय शक्ति है जिसका उपयोग कुछ सीमित प्रयोजनों को लिए होता है। इसके अतिरिक्त जनता के पास सर्वोच्च शक्ति होती है जिसका उपयोग जनता द्वारा विधानमंडल को हटाने या बदलने के लिए उस समय किया जा सकता है जब उसे यह अनुभव हो कि विधानमंडल उस न्यस्त विश्वास के विरुद्ध कार्य कर रहा है। नागरिक समाज और सरकार के बीच संबंध को आपसी विश्वास के रूप में व्यक्त किया गया है। इसमें सरकार को संविदा के एक पक्ष के रूप में मानने से इनकार किया गया है और उसे स्वतंत्र हैसियत तथा प्राधिकार दिया गया है। प्रोफेसर अर्नेस्ट बार्कर और जे.डब्ल्यू. गफ़ ने विश्वास के सिद्धांत के तकनीकी निहितार्थ पर अत्यधिक बल दिया है, जो समुदाय को विश्वसनीय और लाभ का भागी बनाता है और जिसका न्यासी (यानी सरकार) के प्रति कोई कर्त्तव्य नहीं होता। दूसरी ओर लैस्लेट (पृ. 115) इसकी गैर-कानूनी (non legal) अर्थ में व्याख्या करता है जिसमें यह स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है कि ''गवर्नरों के सभी कार्य सरकार के प्रयोजन तक सीमित होते हैं जो शासित-वर्ग के हित में होते हैं। इसकी तुलना द्वारा यह प्रदर्शित किया गया है कि इसमें किसी प्रकार की संविदा नहीं है। बस इसका इतना ही भाव है।"

"विधानमंडल" (जिसकी सर्वोच्च सत्ता) के अलावा भी लॉक ने जनता की दो अन्य शक्तियों का उल्लेख किया है। इनमें से एक कार्यकारी शक्ति है और दूसरी संघीय शक्ति। सरकार की संघीय शक्ति का संबंध आज के विदेश विभाग से है। इसे बाद में मॉन्टेस्क्यू ने "न्यायिक शक्ति" कहा जो कार्यकारी

शक्ति का ही अंग है। कार्यकारी शक्ति (कार्यपालिका) विधानमंडल के अधीन है और इसके प्रति उत्तरदायी है।

यद्यपि विधायिका की सर्वोच्च सत्ता है लेकिन यह निरंकुश नहीं है। सब सबके हित के लिए है यानी इसका उपयोग स्वतंत्रता के संरक्षण और संपत्ति की रक्षा के लिए होना चाहिए। "प्रकृति के कानून का अस्तित्व मानव मात्र के लिए शाश्वत कानून के रूप में है जिसमें विधायक और अन्य सब शामिल हैं। वे अन्य मनुष्यों के कार्यों के लिए जो कानून बनाते हैं वे प्रकृति के कानून के अनुसार सुविधाजनक यानी ईश्वर की इच्छा के अनुरूप होने चाहिए। इनमें यह घोषणा की गई है कि प्रकृति का आधारभूत कानून मानव मात्र के संरक्षण के लिए है, इसके विरुद्ध मानवीय शास्ति या दंड उचित या वैध नहीं हो सकता।" दूसरी विधायी या सर्वोच्च सत्ता केवल विधि-सम्मत तरीके से घोषित और स्थापित कानूनों के सिवाय तात्कालिक, मनमाने आदेशों से शासन नहीं कर सकती। तीसरी' सर्वोच्च सत्ता किसी भी व्यक्ति से उसकी इच्छा के विरुद्ध संपत्ति का कोई हिस्सा नहीं ले सकती। और अंत में, ''विधायिका अपनी कानून बनाने की शक्ति किसी और को नहीं सौंप सकती क्योंकि यह जनता के द्वारा प्रदत्त शक्ति है, जिनके पास यह शक्ति है वे इसे दूसरों को अंतरित नहीं कर सकते।" (सेकेंड ट्रीटाइज़, भाग 141)

"सर्वोच्च" सत्ता पर विधायिका के उक्त प्रतिबंध ने लॉक के संप्रभुता के विचार को कुछ अस्पष्ट कर दिया। सी.ई. वॉन ने अत्यंत स्पष्ट रूप से यह घोषणा की कि "लॉक का संप्रभुता से संबंधित कोई सिद्धांत है ही नहीं, नागरिक सरकार का वास्तविक शासक व्यक्ति है।" (वॉन, पृ. 185) अर्नेस्ट बार्कर के अनुसार, "लॉक के सामने संप्रभुता की प्रकृति का कोई स्पष्ट चित्र नहीं है।" (बार्कर 1958, इन्ट्रोडक्शन) इस प्रकार का कथन लॉक के बारे में अनुचित है। इसका अभिप्राय संप्रभुता के सिद्धांत के केवल एक भेद (यानी हॉब्स-ऑस्टिन की व्याख्या) को स्वीकार करना है जिसे संप्रभुता को निरंकुश शक्ति की इच्छा के रूप में समझा जा सकता है। एक अन्य विचार के अनुसार संप्रभुता शक्ति नहीं बल्कि प्राधिकार है और एक अत्युत्तम तर्क, प्राकृतिक कानून या दैवी आदेश की अभिव्यक्ति है जो सकारात्मक कानून के संबंध में इसकी सक्षमता और प्राधिकार को अस्वीकार किए बिना राज्य की शक्ति के उच्चतर कानून की सीमाओं को स्वीकार करती है। लॉक इसी परंपरा में पला-बढ़ा था। यह उसकी संपूर्ण संवैधानिक सरकार का आधार था। लॉक हूकर और बोडिन के माध्यम से अपने पूर्ववर्ती सेंट थॉमस एक्विनास की बात पर ध्यान देता है; इसका प्रतिनिधित्व इसके समकालीन एलियट, फिलिप हटन और सर मैथ्यू हेल जैसे लेखकों द्वारा किया गया। लॉक इस बात को स्वीकार करता है कि विधायिका के प्राधिकार के पीछे जनता की परम संप्रभुता है जिसे बाद के लेखकों ने लोकप्रिय संप्रभुता का नाम दिया "..... और इस प्रकार समुदाय के पास शाश्वत रूप से सर्वोच्च शक्ति रहती है जिसके द्वारा किसी के भी षड्यंत्र या प्रभाव से यहाँ तक कि अपने विधायकों से भी, यदि कभी ये बेवकूफ़ी या धोखाधड़ी करें या ये अपनी प्रजा की स्वतंत्रता या संपत्तियों के विरुद्ध षड्यंत्र करें तो अपनी रक्षा कर सकती है।" (सेकेंड ट्रीटाइज़, भाग 149) परंतु समुदाय अपनी इस शक्ति का प्रयोग "किसी प्रकार की सरकार के अधीन नहीं करता क्योंकि जनता की इस शक्ति का प्रयोग तब तक नहीं किया जा सकता जब तक सरकार का विघटन न हो जाए" (देखिए भाग 49) और "उन सभी स्थितियों में जब तक कि सरकार सत्ता में बनी रहती है विधानमंडल की शक्ति सर्वोच्च होती है।" (भाग 150) लोकप्रिय या राष्ट्रीय संप्रभुता के सिद्धांत को सही रूप में लॉक पर लागू नहीं किया जा सकता। उसके सिद्धांत में सभी प्रकार के प्राधिकार का अंतिम स्रोत प्रकृति का कानून है। लेकिन तकनीकी अर्थ में संप्रभुता केवल संविधान बनाने वाले निकाय में निहित होती है। "यह विधानमंडल न केवल जनता की

सर्वोच्च शक्ति है बल्कि यह उस समुदाय के हाथों में पवित्र और अपरिवर्तनीय शक्ति है जिसके हाथों में जनता द्वारा एक बार इसे सौंप दिया गया था। इस शक्ति को किसी के भी आदेश से छीना नहीं जा सकता क्योंकि इसके पीछे कानून का बल और बाध्यता होती है। इसे जनता द्वारा चुनी गई और नियुक्त विधायिका का समर्थन होता है।" इसलिए कोई व्यक्ति अपने अत्यंत औपचारिक संबंधों के द्वारा आज्ञा पालन करने को बाध्य हो सकता है जो अंततः सर्वोच्च शक्ति में समाप्त होता है ...." (सेकेंड ट्रीटाइज़ेज़, देखिए 134)

जॉर्ज एच. सैबाइन ने लॉक की तीखी आलोचना करते हुए "टू ट्रीटाइज़ेज़" में प्राधिकार के चार स्तरों का उल्लेख किया है, जिनमें से अंतिम तीन को प्रथम स्तर से ही उत्पन्न हुआ माना जा सकता है। परंतु लॉक ने "इन चारों में से प्रत्येक को एक प्रकार की निरपेक्षता प्रदान की है।" इनमें से प्रथम स्थान व्यक्ति और उसके अधिकारों को दिया गया है, जो पूरी व्यवस्था का आधार है। दूसरा स्थान समुदाय का है जो व्यक्ति के अधिकारों का रक्षक है और सरकार के पीछे स्थित प्राधिकार है। तीसरा स्थान सरकार या विधायिका का है जो संवैधानिक दृष्टि से सर्वोच्च सत्ता है, और अंतिम स्थान कार्यपालिका या राजा का है जिसे एक प्रकार की स्वतंत्र हैसियत और विवेकाधीन शक्ति प्राप्त है और वह विधानमंडल या संसद के अधीन होता है। इसे हम किसी भी प्रकार से लॉक की कटु आलोचना नहीं कह सकते अपितु इसे तो लॉक की प्रशंसा ही कहा जाएगा। लॉक राजनीतिक पद्धति की जटिलता से पूरी तरह से परिचित था और वह राजनीतिक संस्थाओं की घटना-क्रिया-पद्धति को प्रस्तुत करने का प्रयास कर रहा था। इस प्रयास में उसने तथ्यों के सरलीकरण (reductionist) की पद्धति का सहारा नहीं लिया जिसमें सभी चीज़ों की एकल चरम तत्व के रूप में व्याख्या करने का प्रयास होता है। लॉक न तो पूर्णतया नामरूपवादी (nominalist) था और न ही पूरी तरह से यथार्थवादी था। एक संकल्पनावादी होने के कारण वह प्लेटो या प्रौटैगोरस और सोफिस्टों के बजाय अरस्तू के अधिक निकट है। उसकी स्थिति न तो हॉब्स की तरह "काल्पनिक समष्टि" (fictitious corporation) की है और न ही हीगल के विभिन्न अंगों के "मूर्त प्रत्यय" (concrete universal) की है। लॉक प्राकृतिक कानून की सर्वोच्च प्रभुता के अधीन सरकार के विभिन्न अंगों में सामंजस्य और संतुलन बनाए रखना चाहता है।

7.6 सहमति, प्रतिरोध और सहिष्णुता

लॉक का राजनीतिक कर्तव्य का आधारभूत सिद्धांत सहमति पर आधारित सरकार का है। लेकिन सहमति के विचार की समुचित रूप से व्याख्या नहीं हुई है और यह लॉक के सिद्धांत का सर्वाधिक कमजोर अभिलक्षण रहा है। जॉन प्लैमेनात्स ने इसकी अन्वेषणात्मक समीक्षा की है और वह इस निष्कर्ष पर पहुँचा है कि यह कोई उपयोगी प्रयोजन सिद्ध नहीं करता। जिन मामलों में सुस्पष्ट सहमति का अभाव होता है उनमें सहमति को लागू करने के लिए मौन सहमति की संकल्पना को आरंभ किया गया जिसने इसे और भी अधिक संदेहास्पद और अनावश्यक बना दिया। प्लेमनात्ज़ ने आगे कहा कि "यदि तुम यह मान कर चलो कि केवल सहमति से ही आज्ञा-पालन के कर्तव्य की भावना पैदा होती है तो इसका मतलब यह है कि तुम इस बात के लिए तैयार हो जिससे कर्तव्य की भावना पैदा होती है वह अवश्य ही सहमति होनी चाहिए" (जॉन प्लैमेनात्स, पृ. 22) "हम आज्ञा-पालन द्वारा आज्ञा-पालन की सहमति व्यक्त करते हैं। आज्ञा-पालन के द्वारा आज्ञा-पालन के कर्तव्य का जन्म होता है। लेकिन यह बेहूदा बात है।" (पृ. 230) जॉन डन की राज्य में स्वतंत्रता के आधार पर सहमति के विचार में दोष दिखाई देता है।

"दी टू ट्रीटाइज़ेज़" में राजनीतिक कर्तव्य के संभावित अवसर की सीमाओं के संबंध में विचार किया गया है। सहमति का विचार इस चर्चा की व्याख्यात्मक संरचना का मूल शब्द है। लेकिन यह ऐसा शब्द नहीं है जिसके द्वारा विश्व में किसी विशिष्ट युक्ति को लागू करने पर सुस्पष्ट नियंत्रण किया जा सकता हो। इसकी भूमिका शक्ति की तार्किक संरचना के औपचारिक घटक के रूप में है, न कि विशिष्ट मामलों में इसकी प्रयोज्यता की व्यावहारिक कसौटी के रूप में। "सहमति" किसी राजनीतिक समाज की वैधता के लिए आवश्यक शर्त है परंतु जो सहमति ऐसी वैधता पैदा करती है वह ऐसे समाज में किसी प्राधिकार के विशिष्ट कार्य के लिए पर्याप्त शर्त नहीं है।" (जॉन डन, पृ. 143)

सामान्यतः यह समझा जाता है कि लॉक उस गौरवशाली क्रांति का समर्थक था जो संभवतः सब क्रांतियों से अधिक रूढ़िवादी थी। इसलिएँ लॉक प्रतिरोध या विद्रोह के अधिकार के लिए प्रायः "क्रांति" शब्द का प्रयोग नहीं करता। यह उसके राजनीतिक दर्शन का आवश्यक भाग है। जो शासक प्रकृति के कानून के विरुद्ध और जनता के हित के खिलाफ़ सत्ता पर जोर-जबरदस्ती अधिकार करता है या जनता का विश्वास खो देता है और मनमाने ढंग से कार्य करता है उसे शासन करने का वैध अधिकार नहीं रहता। ऐसे में यदि आवश्यक हो तो उसे सत्ता से हटाया जा सकता। इसके अतिरिक्त, जब विदेशी शक्ति किसी देश पर अधिकार कर ले या जब राजा विधानमंडल के सत्र के आयोजन को रोक दे या उसकी कार्रवाई न होने दे या विधानमंडल भंग हो जाए तब भी सरकार भंग हो जाती है। सरकार के पदच्युत होने का यह मतलब नहीं है कि समाज का विघटन हो गया है। लॉक ने इस बात का कोई स्पष्ट उत्तर नही दिया कि विद्रोह करने का किसे अधिकार है। सामान्यतः केवल बहुसंख्यक वर्ग को ही विद्रोह का अधिकार है। यद्यपि लॉक क्रांतिकारी कार्रवाई का समर्थक था, लेकिन वह स्वभाव से अनिवार्यतः रूढ़िवादी था। उसके विचार में क्रांति का आश्रय बहुत ही आत्यंतिक मामलों में ही लिया जाना चाहिए। सैबाइन के अनुसार लॉक के क्रांति के अधिकार के बारे में आग्रह के बावजूद वह क्रांतिकारी नहीं था। बहुत से समालोचकों के विचार में लॉक क्रांति का अधिकार केवल अभिजात वर्ग यानी संपत्तिधारियों को देता है। "यह बात लॉक को और उसके सभी समकालीनों को स्वाभाविक लगती थी कि जिन शासकों ने अपने प्राधिकार का दुरुपयोग किया उनका प्रतिरोध करने का अधिकार व्यावहारिक दृष्टि से शिक्षित वर्ग और संपत्तिधारी वर्ग तक सीमित रहना चाहिए, क्योंकि ऐसे मामलों में केवल समुदाय का उपर्युक्त वर्ग ही बुद्धिमत्तापूर्ण और उत्तरदायित्वपूर्ण निर्णय लेने में सक्षम हो सकता है।" (जॉन प्लैमेनात्स, पृ. 250)

ऐशक्राफ्ट इस विचार से सहमत नहीं है। उसे लॉक में मूलभूत क्रांतिकारी भावना दिखाई देती है। इस विषय में उसने लॉक और व्हिग ओलिगार्ची (जो 1688 की क्रांति के पीछे था) के बीच अंतर पर ध्यान दिया। इस विषय पर लॉक के विचारों को संक्षेप में प्रस्तुत करते हुए ऐशक्राफ्ट ने कहा कि ''प्रतिरोध से तानाशाही हर किसी का कार्य है।" (ऐशक्राफ्ट, पृ. 228)

लॉक के समय में धार्मिक सहिष्णुता एक अत्यधिक महत्वपूर्ण विषय रहा था और उसने अपने सामान्य दर्शन तथा राजनीतिक सिद्धांत के अनुरूप इस पर विशेष बल दिया। उसका मानना था कि अंतकरण बाहरी नियंत्रण का विषय नहीं हो सकता। मनुष्य इस बात में स्वतंत्र है कि वह चाहे जिस धर्म को माने। राज्य को किसी भी तरह से धार्मिक उत्पीड़न नहीं करना चाहिए। उसे धर्म से संबंधित किसी भी प्रकार के अनुष्ठानों के पालन के लिए जबरदस्ती नहीं करनी चाहिए। लेकिन लॉक ने धार्मिक सहिष्णुता की कुछ सीमाएँ आरोपित की थीं - "मजिस्ट्रेट द्वारा न तो नैतिक नियमों और न ही मानव समाज के विरुद्ध सम्मति को सहन किया जाएगा क्योंकि ये नागरिक समाज के लिए आवश्यक हैं।" और न ही समाज में नास्तिकों को सहन नहीं किया जाना चाहिए, क्योंकि जो "प्रतिज्ञाएँ, प्रसंविदाएँ और शपथें मानव

समाज को जोड़ने का माध्यम हैं, उनका नास्तिकों पर कोई प्रभाव नहीं होता। ईश्वर को चाहे विचार में ही सही छीन लेना, सब कुछ समाप्त कर देना है।"

7.7 लॉक की विरासत

जॉन लॉक आधुनिक यूरोप की राजनीतिक विचारधारा की केंद्रीय हस्तियों में से एक है। इस विचारधारा के लिए सबसे अधिक विशेषतासूचक शब्द "उदारवाद" है (हालाँकि इस शब्द का निहितार्थ रूढ़िवादी और उग्र सुधारवादी है)। समय के अनुसार उदारवाद की संकल्पना में बहुत-से परिवर्तन हुए हैं। इनमें एक उदारवाद का क्लासिकी रूप है और एक अन्य रूप को नव-उदारवाद कहा जाता है। लॉक के उदारवाद में रूढ़िवाद और उग्र-सुधारवाद, दोनों के अंश मिले हुए हैं। इसकी मूल प्रेरणा प्राकृतिक कानून और रोम के अधिकवक्ता सेंट थॉमस एक्विनास और रिचर्ड हूकर के प्रतिनिधित्व में दर्शन की क्लासिकी परंपरा में निहित दैवी तर्क के आध्यात्मिक विचार से मिली है। इसका आधुनिक रूपांतरण, जैसा कि लॉक ने स्वयं बल देकर कहा है, व्यक्ति के जीवन, स्वतंत्रता और संपत्ति पर प्राकृतिक अधिकार तथा निरंकुश रजानीतिक शक्ति के प्रतिरोध के रूप में मिलता है। ये विचार 18वीं शताब्दी के दौरान सामान्य राजनीतिक चर्चा और व्यवहार का भाग बन गए थे और इसने टॉम पेने, जैफर्सन और रूसो जैसे विचारकों को प्रेरणा प्रदान की। दूसरी ओर अनुभवाश्रित और व्यावहारिक दृष्टि से इसने अंग्रेज उपयोगितावादियों और कुछ दृष्टियों से ह्यूम और एडम स्मिथ जैसे विचारकों को प्रभावित किया। प्रत्यक्षवादी विज्ञानों और अनुभवाश्रित पद्धति के विकास से लॉक के सिद्धांत के बुद्धिपरक पक्ष, लोकोत्तर देवता और प्राकृतिक कानून में विश्वास को अध्यात्म के स्वर्ग प्रदेश की श्रेणी में रख दिया। लेकिन प्राकृतिक अधिकारों को (विशेष रूप से संपत्ति पर अधिकार को) उन्नीसवीं और बीसवीं शताब्दियों की इच्छा स्वातंत्र्यवादी उदारवाद (libertarian liberalism) में सम्मिलित कर लिया गया। रॉल्स, ड्वॉर्किन और नोज़िक जैसे लेखकों (विशेष तौर पर नोज़िक) पर लॉक के विचारों की स्पष्ट छाप दिखाई देती है और वे लॉक से अपनी घनिष्ठता व्यक्त करते हैं। लेकिन लॉक की आधुनिक उदारवादी विचारकों से यह घनिष्ठता केवल उसके विचारों के धार्मिक और आध्यात्मिक पक्षों को नज़रअंदाज करने की कीमत पर स्थापित हुई है। यहाँ प्रोफेसर रेमंड पोलिन की गंभीर प्रतिक्रिया का उसके ही शब्दों में उल्लेख करना उपयुक्त होगा :

> हमने, इसके विपरीत, यह दिखाने का प्रयास किया है कि उसकी दृष्टि से स्वतंत्रता मानवों को ईश्वर द्वारा प्रदत्त साधन के अतिरिक्त कुछ नहीं है। ये मनुष्य बुद्धि संपन्न, तर्कयुक्त और समाज के निर्माण में सक्षम हैं और वे अपने आपको विश्व की व्यवस्था में ढाल सकते हैं और जब वे बड़े तथा परिपक्व हो जाते हैं तो वे इसके अर्थ को खोज और समझ सकते हैं। इस रूप में स्वतंत्रता को हमेशा व्यवस्था के साथ अन्योन्याश्रित रूप में समझना चाहिए। लॉक के अनुभव के अनुसार मनुष्य एक ऐसा प्राणी है जो स्वतंत्रता और तर्क के आधार पर जीने में समर्थ है और वह अपने कर्तव्य के द्वारा विश्व की दैवी व्यवस्था से बंधा हुआ है। इस कर्तव्य का प्रयोजन यह या तो जिस क्रम से वह दूसरे लोगों के साथ संबंध बनाता है या जिस प्रकार विश्व के साथ तर्कसंगत तरीके से संबंध स्थापित करता है के द्वारा स्वयं को, वास्तव में स्वतंत्र और तर्कसंगत बनाना है, लॉक के अनुसार स्वतंत्रता का अस्तित्व तभी है और तभी वह सार्थक है यदि वह पर्याप्त और नैतिक व्यवस्था स्थापित करने के कर्तव्य से बंधी हो। यह सिद्धांत किसी सच्चे और सक्षम उदारवाद के आधार के रूप में हो। (जे. डब्ल्यू. यॉल्टन की पुस्तक में रेमंड पोलिन, पृ. 17-18)

7.8 साराश

विभिन्न लोगों ने लॉक की अलग-अलग तरीके से व्याख्या की है। एक विवाद का संबंध "ऐन ऐस्से कनसर्निंग ह्यूमन अंडरस्टैडिंग" में व्यक्त ज्ञान के अनुभवाश्रित सिद्धांत और "सेकेंड ट्रीटाइज़ ऑफ सिविल गवर्नमेंट" में वर्णित प्राकृतिक कानून के तर्क पर आधारित विचार के बीच कथित विवाद से संबंधित है। यह कहा गया है कि प्राकृतिक कानून के विचार का लॉक के समग्र अनुभववाद से समाधान नहीं किया जा सकता, जो उसके अनुभव और चिंतन के ज्ञान के उद्‌गम के सिद्धांत में दिखाया है।

प्राकृतिक कानून लॉक के राजनीतिक सिद्धांत का अनिवार्य अंग है। चूँकि मनुष्य स्वभाव से सामाजिक प्राणी है इसलिए लॉक के अनुसार वह पूर्व-राजनीतिक तो है लेकिन पूर्व-सामाजिक नहीं है। प्रकृति की अवस्था शांति, सौहार्द, पारस्परिक सहायता और आत्म-संरक्षण की अवस्था है। इसमें प्रकृति का कानून है जो शासन के लिए ईश्वर का तर्क है। लॉक की एक अन्य महत्वपूर्ण संकल्पना जीवन, स्वतंत्रता और संपत्ति पर प्राकृतिक अधिकार की है जो प्राकृतिक कानून से उत्पन्न होती है और इसी के द्वारा सीमित भी होती है। मनुष्य को विनियोजन का असीम अधिकार नहीं है। वह श्रम सीमा, पर्याप्तता सीमा और बिगाड़ने की सीमा द्वारा परिसीमित है।

मनुष्य, चूँकि स्वभाव (प्रकृति) से स्वतंत्र, समान और स्वाश्रित है इसलिए अपनी सहमति के बिना उसे कोई भी किसी दूसरे की राजनीतिक शक्ति के अधीन नहीं कर सकता। इस प्रकार एक नागरिक समाज बनाने के लिए आम सहमति की आवश्यकता होती है। इसके बाद प्राकृतिक कानून को लागू करने के लिए सरकार या विधानमंडल की स्थापना की जाती है। यह प्राधिकरण या विधायिका सर्वोच्च सत्ता है। इसके अतिरिक्त जनता की दो और शक्तियाँ होती हैं। ये हैं - कार्यकारी (जिसमें न्यायपालिका भी शामिल है) और संघीय शक्ति (जिसका संबंध विदेशी मामलों से होता है)। कार्यकारी शक्ति (कार्यपालिका), विधानसभा (विधायिका) के प्रति उत्तरदायी होती है। विधानसभा मनमाने आदेशों से शासन नहीं कर सकती, वह केवल घोषित और सुप्रतिष्ठित कानूनों के द्वारा ही शासन कर सकती है। जहाँ तक संप्रभुता का संबंध है, लॉक का कथन है कि विधानसभा के प्राधिकार के पीछे अंतिम प्रभुसत्ता जनता की है, जिसे बाद में लोकप्रिय संप्रभुता कहा गया।

यद्यपि लॉक के सिद्धांत का आधारभूत सिद्धांत सहमति पर आधारित है लेकिन उसने सहमति की संकल्पना की व्याख्या नहीं की। इस कारण लॉक की बहुत आलोचना हुई है। उसका गौरवपूर्ण क्रांति के समर्थक के रूप में वर्णन किया गया है। विद्रोह या प्रतिरोध उसके दर्शन का अनिवार्य अंग है, लेकिन उसने स्पष्ट रूप से उल्लेख नहीं किया है कि विद्रोह करने का अधिकार किसे है। और आलोचकों का तो यह भी कहना है कि उसने यह अधिकार केवल भूस्वामी अभिजात वर्ग को दिया है, परंतु यह भी विवादास्पद रहा है।

7.9 अभ्यास

1. लॉक द्वारा परिभाषित संपत्ति के स्वामित्व की सीमाओं के बारे में चर्चा कीजिए।
2. जॉन लॉक के सहमति, प्रतिरोध और सहनशीलता के विचारों के संबंध में संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।
3. संप्रभुता के संबंध में लॉक के क्या विचार हैं?